... पर पाया जाता है।

⇒ पवन दिशा तथा तत्सम्बन्धी नियम :

वायु की प्रवाह दिशा पर कोरियालिस बल (विक्षेप) के प्रभावो के आधार पर पवन दिशा से सम्बन्धित निम्न दो नियमो का प्रतिपादन किया गया है —

1- **फेरल का नियम :** जिस दिशा मे पवन प्रवाहित हो रही है यदि उस दिशा मे मुँह करके (अथवा जिस दिशा से पवन आ रही हो उस दिशा की ओर पीठ करके) खड़े हो जाए तो हवाएं उत्तरी गोलार्द्ध मे दाहिनी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध मे बायी ओर मुड़ जाती है।

2- **बायज बैलट का नियम :** भूमध्य रेखा पर हवाओ की दिशा पर पृथ्वी की अक्षीय गति (घूर्णन गति) का प्रभाव नगण्य होता है। इन्ही तथ्यो के आधार पर बायज बैलट ने वायुदाब की स्थितियो से सम्बन्धित अपने नियम को प्रतिपादन किया। —

"जिस दिशा मे हवा प्रवाहित हो रही है यदि उस दिशा मे मुँह करके खड़ा हुआ जाय तो उत्तरी गोलार्द्ध मे न्यून दाब बायी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध मे दाहिनी ओर होगा।"

जियोस्ट्राफिक पवन :

स्थलीय या जलीय सतह के ऊपर निचले वायुमण्डल में 500 से 1000 मी० की ऊंचाई पर समदाब रेखाओं के समानान्तर परन्तु दाब प्रवणता के समकोण पर प्रवाहित होने वाली वायु को जियोस्ट्राफिक पवन कहते हैं।

निचले वायुमण्डल के जिस क्षेत्र में जियोस्ट्राफिक हवाएं चलती हैं उसे जियोस्ट्राफिक परत कहते हैं।

लैमिनर प्रवाह : किसी भी गतिमान पदार्थ के अणुओं या कणों के एक ही दिशा में आगे बढ़ने की प्रक्रिया को लैमिनर प्रवाह कहते हैं।